IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

कवि शिशुपाल सिंह ''शिशु'' के काव्य में प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक दर्शन।

डॉ. भावना सिंह भदौरिया
(एम.ए. पी.एच.डी. नेट, स्लेट)
सहायक प्राध्यापक, शास. महाविद्यालय, बानमौर, मुरैन

कवि शिशुपाल सिंह ''शिशु'' हिन्दी काव्य जगत में एक नक्षत्र की तरह चमकने वाले कवि थे। ''शिशु'' जी का जन्म उदी इटावा (उ.प्र.) में हुआ था। जिसका उनके काव्यों पर बहुत प्रभाव पड़ा। ''शिशु'' जी ने अपने काव्यों में प्राकृतिक चित्रण को विशेष महत्व दिया तथा जीवन में होने वाली सभी क्रिया कलापों को उन्होंने प्रकृति से जोड़कर उसे जीवतता प्रदान की। कवि ने प्रायः अपने काव्यों में यमुना–चंबल आँचल के बीहड़ो का अद्‌भुत वर्णन किया है तथा अपने काव्यों में प्रकृति के अनुपम दृश्यों का सजीव चित्रण किया है। ''शिशु'' जी का मानना था कि मनुष्य के लिये प्रकृति सबसे बडी धरोहर है जिसे सहेज कर रखना प्रत्येक मनुष्य की जिम्मेदारी है ताकि इसका लाभ आने वाली पीढ़ियों को मिल सके। कवि अपने काव्य के माध्यम से प्रकृति को संभालकर एवं सजोंकर रखने की बात अपने श्रोताओं तक पहुंचाना चाहते थें

सन्दर्भ

[1]. नदिया किनारे, शिशुपाल सिंह ''शिशु'' (1947), हैदराबादः मारबाडी नवयुवक मण्डल नवयुवक मण्डल।

[2]. 'शिशु' स्मृति गन्ध (2000), इटावा, शिशु स्मारक समिति इटावा (उ.प्र.)